MP Board Class 7th Notes Sanskrit Chapter 2 कालबोध:

कालबोधः हिन्दी अनुवाद :

शिष्यः :
महोदय! रात्रिदिवसयोः विभाजनं कथं भवति?

गुरुः :
पृथ्वी गोलाकारा विद्यते। एषा अहर्निशं केन्द्र परिभ्रमति।
यदा अस्याः यः भागः सूर्यस्य सम्मुखे भवति तत्र सूर्यस्य
किरणाः पतन्ति तदा दिनं जायते। यस्मिन् भागे किरणाः न
पतन्ति तत्र अन्धकारः भवति रात्रिश्च जायते। सूर्यः प्रातः पूर्वस्यां दिशि उदेति सायं च पश्चिमदिशि अस्तं गच्छति। एवं सूर्यस्य उदयानन्तरं दिनस्य अस्तानन्तरं च रात्रेः ज्ञानं भवति। दिवानिशानुसारमेव जनाः विविधाः क्रियाः सम्पादयन्ति।

अनुवाद :
शिष्य-महोदय! रात और दिन का विभाजन कैसे होता है?

गुरु :
पृथ्वी गोल आकार की है। यह रात और दिन केन्द्र पर (अपनी कीली पर) घमती है। जब इसका जो भाग सर्य के सामने होता है, वहाँ सूर्य की किरणें गिरती हैं, तब दिन होता है। जिस भाग में किरणें नहीं गिरती हैं, वहाँ अंधेरा होता है और रात्रि हो जाती है। सूर्य प्रात:काल पूर्व दिशा में उदित होता है और सायंकाल को पश्चिम दिशा में छिप जाता है। इस प्रकार, सूर्य के उदय होने के बाद और दिन के अस्त हो जाने के बाद रात्रि का ज्ञान हो जाता है। दिन और रात्रि के अनुसार ही मनुष्य अनेक प्रकार के कार्य पूर्ण किया करते हैं।

शिष्यः :
सप्ताहे कति दिनानि भवन्ति?

गुरुः :
सप्ताहे सप्त दिनानि भवन्ति। तेषां नामानि तु-रविवासरः, सोमवासरः, मङ्गलवासरः, बुधवासरः, गुरुवासरः, शुक्रवासरः, शनिवासरः चेति। शिष्यः-वर्षे कति मासाः भवन्ति?

गुरुः :
वर्षे द्वादश मासाः भवन्ति। तेषां नामानि तु-चैत्रः, वैशाखः,
ज्येष्ठः, आषाढः, श्रावणः, भाद्रपदः, आश्विनः, कार्तिकः,
मार्गशीर्षः, पौषः, माघ, फाल्गुनः चेति।

शिष्यः :
तिथयः कति भवन्ति? अनुवाद-शिष्य-एक सप्ताह में कितने दिन होते हैं?

गुरु :
एक सप्ताह में सात दिन होते हैं। उनके नाम हैंरविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार तथा शनिवार।

शिष्य :
एक वर्ष में कितने महीने होते हैं?

गुरु :
एक वर्ष में बारह महीने होते हैं। उनके नाम हैं-चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन (क्वार), कार्तिक, मार्गशीर्ष (अगहन), पौष, माघ और फाल्गुन (फागुन)।

शिष्य :
तिथियाँ कितनी होती हैं?

गुरुः :
प्रतिपक्षं तिथयः पञ्चदश भवन्ति। यथा-प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा, अमावस्या वा।

मासे द्वौ पक्षौ भवतः शुक्लपक्षः, कृष्णपक्षः चेति। शुक्लपक्षे पूर्णिमा कृष्णपक्षे च अमावस्या भवति। शुक्लपक्षे चन्द्रः क्रमशः वर्धते। पूर्णिमायां सः पूर्णतां प्राप्नोति। सः पञ्चदशभिः कलाभिः पूर्णः भवति। कृष्णपक्षे च क्रमशः क्षयं प्राप्नोति। प्रतिदिनं तस्य एका कला क्षीयते। अमावस्यायां सः पूर्णरूपेण लुप्तः भवति।

अनुवाद :
गुरु :
प्रत्येक पक्ष (पाख) में पन्द्रह तिथियाँ होती हैं। जैसे-प्रतिपदा (पड़वा), द्वितीया (दौज), तृतीया (तीज), चतुर्थी (चौथ), पञ्चमी (पाँचें), षष्ठी (छठ), सप्तमी (सातें), अष्टमी (आठ), नवमी (नौमी), दशमी, एकादशी (ग्यारस), द्वादशी, त्रयोदशी (तेरस), चतुर्दशी (चौदस), पूर्णिमा (पूर्णमासी या पूनों) अथवा अमावस्या (मावस)।

महीने में दो पक्ष होते हैं-शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष। शुक्ल पक्ष में पूर्णिमा और कृष्ण पक्ष में अमावस्या होती है। शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा धीरे-धीरे बढ़ता जाता है। पूर्णमासी को वह पूर्णता को प्राप्त कर लेता है। वह पन्द्रह कलाओं से पूर्ण होता है और कृष्णपक्ष में क्रमशः क्षय (क्षीणता) को प्राप्त कर लेता है। प्रत्येक दिन उसकी एक कला क्षीण हो जाती है। अमावस्या को वह पूर्ण रूप से छिप जाता है।

शिष्यः :
वर्षे कति ऋतवः भवन्ति?

गुरुः :
चैत्रवैशाखयोः-वसन्तः, ज्येष्ठाषाढयोः-ग्रीष्मः,
श्रावणभाद्रपदयोः-वर्षा, आश्विनकार्तिकयोः-शरद्,
मार्गशीर्षपौषयोः-हेमन्तः, माघफाल्गुनोः-शिशिरः एवं षड् ऋतवः भवन्ति। शिष्य! एकादशतः विंशतिपर्यन्तं संख्यां गणय।

शिष्यः :
आम्! एकादश, द्वादश, त्रयोदश, चतुर्दश, पञ्चदश, षोडश, सप्तदश, अष्टादश, नवदश, विंशतिः।

https://www.evidyarthi.in/

गुरु :
साधु वत्स! सम्यगुक्तम्। अनुवाद-शिष्य-वर्ष में कितनी ऋतुएँ होती हैं?

गुरु :
चैत्र और वैशाख में बसन्त, ज्येष्ठ और आषाढ़ में ग्रीष्म, श्रावण और भाद्रपद में वर्षा, आश्विन और कार्तिक में शरद, मार्गशीर्ष (अगहन) और पौष में हेमन्त, माघ और फाल्गुन में शिशिर, इस तरह छः ऋतु होती हैं। हे शिष्य! ग्यारह से बीस तक की संख्या गिनो।

शिष्य :
जी हाँ! ग्यारह, बारह, तेरह, चौदह, पन्द्रह, सोलह, सत्रह, अठारह, उन्नीस, बीस।

गुरु :
बहुत अच्छा वत्स! ठीक बताया है।

कालबोधः शब्दार्थाः

अहर्निशम् = दिन और रात। गोलाकारा = गोल आकार की। कला = शोभा (चन्द्रमा की कला)। पक्ष = पखवारा (महीने का आधा भाग)। क्षयं = नाश, हानि को।